श्रद्धा सुमन

Guruji "The Only Fact"

गुरु स्थान

702/7 अर्बन स्टेट, गुड़गाँव (हरियाणा)

हिमगिरी चेरिटेबल ट्रस्ट,

से.–10/ऐ, पटोदी रोड, गुड़गाँव (हरियाणा)

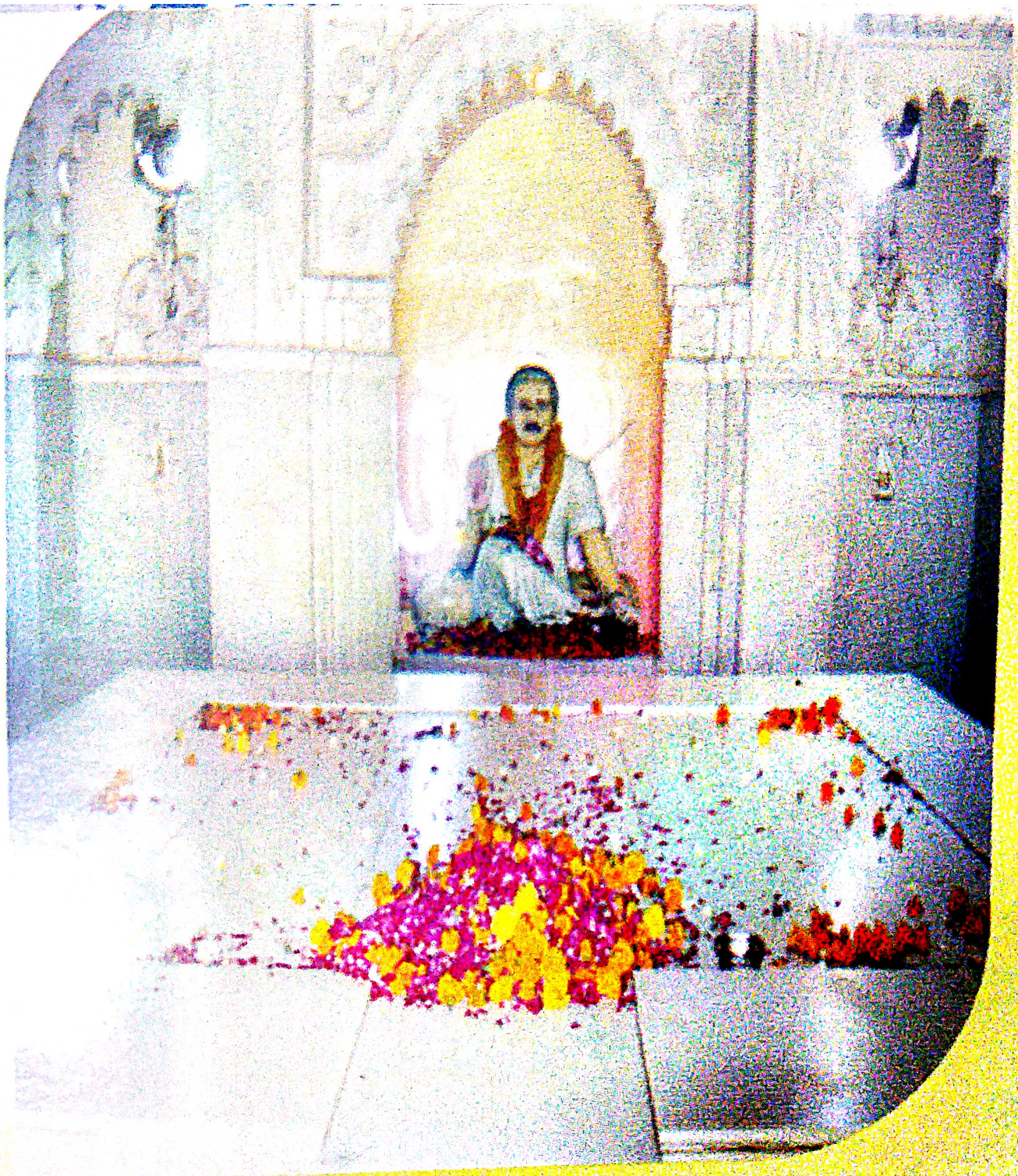

समाधि

नीलकंठ धाम, नजफगढ़ रोड
पावर हाउस के समीप, नई दिल्ली

GURUSTHAN
LONAVALA
IMGIRI SPIRITUAL RESEARCH & TRAINING C
URUGAON, NEAR PAWANA DAM, TAL-MAVAL, DIST-PUNE.
-MINOO MINAR, VEERA DESAI ROAD, ANDHERI (W), MUMBAI - 53.

श्रद्धा सुमन

गुरू ब्रह्मा, गुरू विष्णु,
गुरू देवो महेश्वरा,
गुरू साक्षांत परब्रह्म,
तस्मैश्री गुरूवे नमः ।
तस्मैश्री गुरूवे नमः ।
तस्मैश्री गुरूवे नमः ।

प्रकाशक
हिमगिरि आध्यात्मिक अभ्यास एवं सेवा केन्द्र

संस्करण – गुरुपौर्णिमा पर्व २०११

प्रकाशक
हिमगिरि आध्यात्मिक अभ्यास एवं सेवा केन्द्र
21, सिद्धार्थ एन्क्लेव
आश्रम चौक, नई दिल्ली

मूल्य :- श्रद्धा

सर्वाधिकार प्रकाशक के अधीन सुरक्षित है। इस पुस्तक का कोई भी भाग प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना प्रकाशित नहीं किया जा सकता।

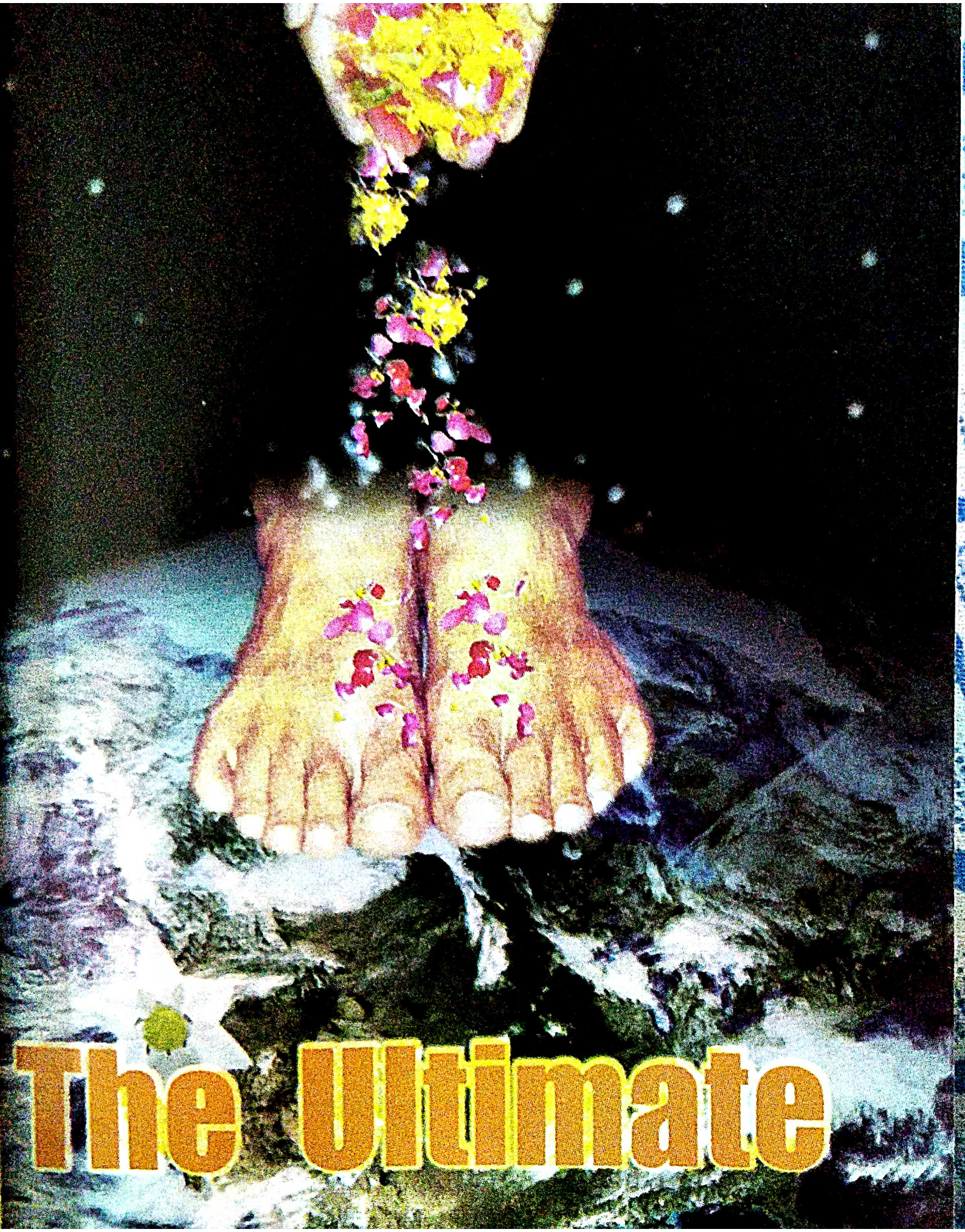
The Ultimate

ध्यान मूलं गुरुर्मूर्ति
मंत्र मूलं गुरुवाक्यम्
पूजा मूलं गुरौपदम्
मोक्ष मूलं गुरौकृपा।

जग बूँद से बना और,
मिट के फिर खाक हुआ,
कोई एक विरला परम सूक्ष्म में समाकर विराट
हुआ।

देख कर प्रेम में दिवाना हुआ,
संग में सेवा से मस्ताना हुआ,
समाकर गुरू में नजराना हुआ,
धन्य हुई सृष्टि, जिसका वो आशियाना हुआ।

गुरू दिव्य, माँ भव्य,
सेवा प्रेम से होगा सभ्य,
अंगूठा कटा, हुआ एकलव्य,
शीश चढ़ा, हो जा शिष्य।

प्रेम जिसका लबाबा,
मिलन जिसका मरहबा,
वो ही है हमारा बाबा।

गुरू देता है, खुश होता है और भुला देता है,
इंसान लेता है, रोता है और भूल जाता है।

"मैं" सबसे बुरी बुराई,
लगे रहो छूट ही जाएगी "मैं",
सबसे अच्छी अच्छाई – कभी ना छूटे,
बनो गुरु की "परछाई"।

मालिक है प्रधान,
रचना है महान,
छोड़ मान–अपमान,
सेवा में रम जाए ध्यान,
कल्याण ही कल्याण।

जन्म, पहली खुराक ;माँ का दूध,
आखरी खुराक ;गंगाजल,
सब पाया बिन मोल,
सेवा से जुड़, छोड़ मोल–तोल,
मिल जाएगा अनमोल।

जन्मों से तू नहीं है सही,
फिर भी सदा अपनी कही,
गुरू से करा ले आत्मा को सही,
तब ही होगा यह जीवन सही,
फिर ना कहना नहीं कही।

माँगने से मिला, का अंत है,
मानता से पाया अनंत है,
माँगने से तू बना मँगता,
मानता से तू सँवरता,
माँगने में फँसी तेरी जान है,
मानता में तेरी पहचान है।

वो ही है कर्त्ता, भ्रम है तू करता,
वो ही है कर्म, सोच है तेरा मर्म,
वो ही है कारक, समर्पण है निवारक।

कर से सेवा कर,
नहीं तो देना पड़ेगा कर!

सुनाने से सुनना भला,
कहने से करना भला
ज्ञान से ध्यान भला,
ध्यान से भली सेवा,
कर सेवा मिलेगा महादेवा।

सुनता है क्षण भर, सुनाता है मन भर,
करता है कण भर, भ्रम तुझे तन भर,
उसमें और तुझमें, तेरी सोच का है भेद,
अपने इस भेद, को तू दे भेद,
जान जाएगा उसका भेद,
नहीं तो इस जन्म पर होगा तुझे खेद।

जन्मा तुझे कुदरत की आन,
सँवारा तुझे कुदरत की शान,
तुझमें रख दी खुद की पहचान,
दूसरों की सेवा में लगा ये प्राण,
खुद ही सब जाएगा जान।

बीते कल का ध्यान नहीं,
आते कल का ज्ञान नहीं,
आज के पल का मान नहीं,
जानवर है तू इंसान नहीं,
गर, गुरू चरणों में तेरे प्राण नहीं।

इधर का आर, उधर का पार,
उधर का आर, इधर का पार,
करना है जो मालिक का दीदार,
उतरना पड़ेगा बीच मँझधार,
क्योंकि, आकार–साकार के मेल से,
बनता है निराकार।

तू अंहकार में जी कर मरता है,
अंहकार में चल कर सड़ता है,
अहंकार में उगल कर गलता है,
और मालिक की बगिया में कीचड़ करता है,
ध्यान में रह, आज्ञा में चल, सेवा में जी,
खिल जाएगी फिर बगिया कीचड़ में भी।

गुरू प्रेम से कर ले मन को नम,
तब होगा ये शांत,
मिल जाएगा एकांत।

मालिक है दर्पण,
जगा मन में तड़पन,
भावना से हो समर्पण,
फिर तेरा है प्यारे, हर पल,
हर कण, हर क्षण।

ध्यान से परख और परख को सेवा से बाँट,
तो जन्मेंगे संस्कार,
संस्कारों से जीवन को कर समर्पण,
तो मिलेंगे गुरू चरण।

तेरी सोच में कज़ा और सज़ा।
मालिक की रज़ा में फिज़ा और मज़ा।

देखाभाला, सुना, करा और पाया,
पर किसी को कराके समझ में आया,
सत्कर्म कराने से मालिक मिल जाता है,
आसक्ति करने से पता भी नहीं मिल पाता है।

बन्दा क्या, गर बन्दगी नहीं,
जिन्दा है पर जिन्दगी नहीं,
इंसान क्या, गर इंसानियत नहीं,
मानव कैसा, गर मानता नहीं,
मालिक का होकर,
तू खुद को पहचानता नहीं।

हर पल में हल ही हल,
पर होती रही, कल, आज, कल,
जड़ में दिया जल, तो पाया ये फल,
गुरू चरण है परम–सरल।

भाग्य को कोसने से हाथ नहीं कुछ आता है,
सत् कर्म इन हाथों से कर,
भाग्य खुद बन जाता है।

गुरू मिला–भाग्यवान,
सेवा मिली–सौभायग्वान,
अर्पण कर सेवा तो पाएगा,
मालिक की पहचान।

गुरू दिल्लगी,
शिष्य दिल–लगी।

शिक्षा बिना समाज मुर्दा,
आत्मा बिना शरीर मुर्दा,
गुरू बिना जीवन मुर्दा।

करता है तू लाख जतन,
मन से कर ले एक प्रयत्न,
कर दे अर्पण मन, तन, धन,
मिल जाएगी, मालिक की शरण।

मन वाला आ गया,
दिमाग वाला आया–गया।

जाते समय से सीख ले,
आते समय का मोल,
तेरे अंदर बैठा वो रहा है बोल।

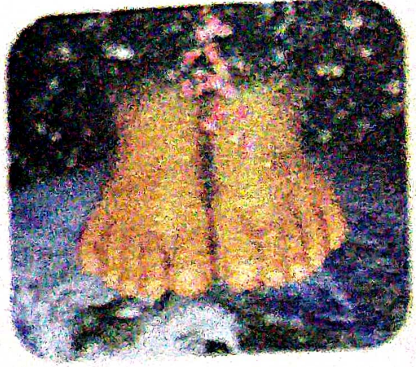

सेवकराम से कृपालदास,
कृपालदास से धूलीप्रसाद।

खुली आँख तो खिला मन,
खिला मन तो जगी आत्मा,
जगी आत्मा तो मिला परमात्मा।

कहने करने में अलग अगल मत,
जो करा ले, वो कुदरत।

गुरू के आने में
गुरूर के जाने में, लगता है पल,
फिर भी सब लगाते अक्ल,
आज ही रम जा सेवा में,
नहीं आता कल।

Dream – Effortless Sleep
Aim – Sleepless Effort

गुरू चरण में ले शरण,
माथा टेक होगा नेक।

मालिक के यहाँ न देर है न अंधेर है,
कर सत्कर्म, तेरे कर्मों का फेर है।

मन भर स्वार्थ से, एक पल परमार्थ भला,
मन भर कोयले से, एक ग्राम सोना भला।

ये जीवन है इक सपना,
गुरू है इक अपना।

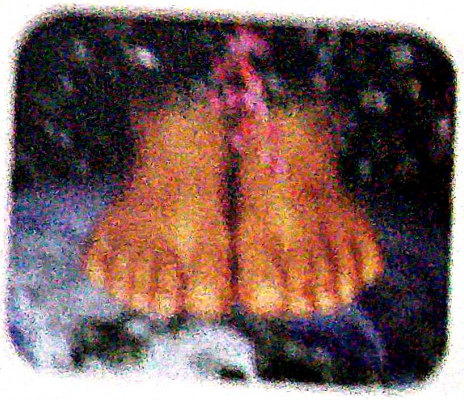

शिष्य की शीश पर आशीष
महकेगा जीवन, हो गुरू की कशिश।

जीवन तेरा लोच खाए,
क्योंकि तू सोच लगाए,
जबकि न सोच के आए,
न सोच के जाए।

कोई भ्रम में गया, कोई तन में गया।
कोई विरला उसमें समा गया।

शरीरों का मिलन भोग है,
आत्माओं के मिलन से योग है,
योग से जीवन में जान है,
भोग खा जाता प्राण है।

गुरु बिन कठिन है डगर पनघट की,
सेवा मे रम जाओं, गर भरनी है मटकी।

योग में जीवन है सफर, खिलते हैं फूल,
भोग में जीवन **Suffer,** बनता है **Fool.**

भक्ति का सूरज,
श्रध्दा का दीपक,
दोनों एक समान।

बुध्दि की प्रगति से दुर्गति,
सत्बुध्दि से मिली प्रकृति,
हर तरफ शोर है मिला ना कोई छोर है,
ध्यान कहीं और है,
लगा मन सेवा में तो पता चला,
गुरू चरणों में ही ठौर है।

तन की प्यास खाने से,
मन की प्यास पाने से,
और, आत्मा की प्यास समाने से मिटती है।

भर जाएगा जीवन का हर घाव,
सेवा से जब मन हो जाएगा गुरूगाँव,
गाँव में गाँव गुरूगाँव,
चल पड़े, उसी तरफ पाँव,
पहुँचने पर मिट गए सब भ्रम,
जब पायी गुरू चरणों की छाँव।

तेरा मन हो अंगना,
तो बस जाएगा सजना।

जब तक है छल–बल,
होता रहेगा जल–थल,
सेवा में लगा हर पल,
मिल गया जल में जल।

भक्ति, साधना, तप, उपवास
जो भी करो मन से करो,
सबसे अच्छा, मन गुरू चरणों में धरो।

अंतर आत्मा में द्वन्द घमासान,
थम जाएगा, मान मालिक का एहसान।

बिन गुरू जिन्दगी, जिया तो क्या जीया,
सत्कर्मों से जुड़ा, तो मिल गया पिया।

पंगा से अच्छी गंगा है,
सत्कर्मों से बन्दा है।

मालिक सबके दिल में,
फकीर मालिक के दिल में।

निष्काम सेवा की चाहत,
हर भावना को राहत।

मालिक दया का सागर है,
उस सागर की तू गागर है।

कर्म करो ऐसे कि वो खुद आए,
खुद आए, तो खुदा कहलाए।

तू–तू, मैं–मैं से जीवन में दाग,
तू–तू, मैं–मैं से भला वैराग्य।

जन्म के साथ मिले दो अधिकार,
प्रार्थना और पुकार।

जीवन में न जाने, क्या–क्या चाहिए,
कुदरत से जो मिला, मन से अपनाइए,
सेवा से जीवन में खुशबू फैलाइए,
बिन माँगे फिर सब कुछ पाइए।

माँग अधूरी तो अभागन,
माँग भरी तो सुहागन,
मालिक के नाम की भर ले माँग।

डाक्टर का किया इलाज कहलाता है,
इंजीनियर का किया निर्माण कहलाता है,
व्यापारी का किया व्यापार कहलाता है,
इन सबसे सीख, मेहनत कर मानव बन,
फिर तेरा हर कर्म "सत्कर्म" कहलाएगा।

सच अपनाने से, प्रेम निभाने से,
कर्म कमाने से, शीश नवाने से,
मालिक के मानने से आ जाती है वो बात,
कि बन जाती है हर बात।

जो भी पाया, उपयोग में लाया,
आनंद आया,
आनंद बाँटा, तो "परम–आनंद" पाया।

गुरू शिष्य का आभारी,
फिर भी गुरू हल्का, शिष्य भारी।

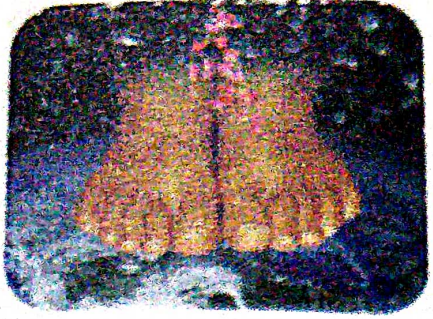

जीवन की चमक,
चेहरे की दमक,
पैसे की खनक,
इच्छा की कसक और
प्राप्ति की ललक,
इन सब से उत्तम है
'सेवा की महक'।

जग ताने–बाने बुनता है,
मालिक फकीरों की सुनता है।

मालिक के हर इशारे पर
फिदा होकर, लाँघे हर लकीर,
कायनात है उसकी, नाम जाको फकीर।

असल में वो खुशनसीब है,
दूर होकर भी जो दिल के करीब है।

जन्म है प्रमाण कि,
दर्द सहकर निर्माण।

Patience - Not Patient
No Patience - Patient

मालिक की दया बेहिसाब,
रचना है नायाब,
रचनाकार है लाजवाब,
स्वयं का स्वयं है जवाब,
फिर भी शिष्य का भेजा खराब।

पारब्रम्ह निराकार,
ब्रम्ह आकार,
भ्रम विकार,
सेवा साकार।

कर्मयोग से आत्मा को,
कर गुरू का निवास,
विकारों का कर निकास,
श्रध्दा का हो मन में वास,
सेवा में लग जाए हर स्वांस,
तभी होगा सही विकास।

ध्यान वाला तर गया,
करने वाला करा गया,
कराने वाला तर गया,
सोच वाला वढ़ गया।

साँच को आँच नहीं,
क्योंकि साँच ही है वो आँच,
जिसमें निखरे मन का काँच।

तेरा कुछ नहीं, सब कुछ उसका,
उसका सौंपने में दिल धड़के तेरा,
ये धड़कता दिल उसको सौंप दे,
बाकी, उसका सब रख ले अपने पास

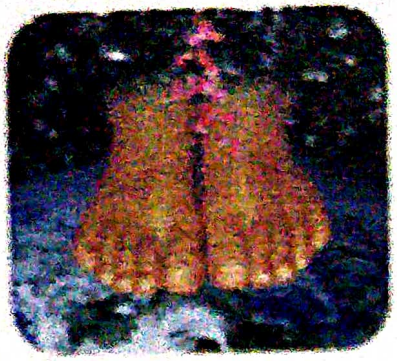

खोजने वाला गहराई में मोती पाता है,
गर्भ की गहराई से आता है,
प्रकृति की गहराई में समा जाता है।

आज के युग का इंसान,
कहता है कि भलाई करने से, मिलती है बुराई,
ध्यान लगाए तो जान जाएगा,
धन्य है वो 'गुरू',
जो कराता है इंसान रूपी बुराई से भी भलाई,
इसलिए कर भला होगा भला।

एक तो करेला, ऊपर से नीम के पेड़ पर,
जैसे इंसान, एक तो भ्रम में ऊपर से सोता है,
तभी तो खोता है,
जो जाग गया सो पा गया।

जीवन में सब कुछ जा कर आता है,
सिर्फ समय जाता है और जाता है।
समय रहते हो सचेत,
नहीं तो चिड़िया चुग गई खेत।

गुरू ने जीवन दिया,
जीवन में गुरू मिला,
जान ले, जीवन है जीने के लिए,
जीविका जीवन के लिए।

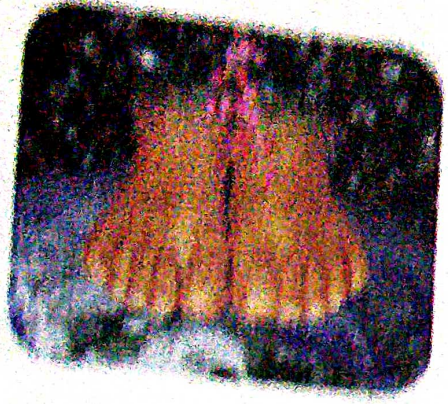

पुकार में हो दम तो,
उसके हृदय तक पहुंच ही जाती है,
जैसे रस्सी पत्थर पर निशान बनाती है,
लगे रहो,
जब तक जीवन में लगन नहीं आती है।

मानव में मालिक,
गागर में सागर।

होता है जो, मालिक को भाता है,
फिर भी तू अपनी चलाता है,
प्रकृति का भेजा खाता है,
मत भूल, तेरी हर एक स्वांस का उसके यहाँ
'खाता' है।

हाला समझी,
तो "पाठशाला",
हाला चखी तो "गोशाला",
हाला हो गये तो,
हो गए, "मधुशाला"।

तेरे आकार में विकार,
विकारों से लाचार,
सबसे बढ़िया है नमस्कार, परोपकार।

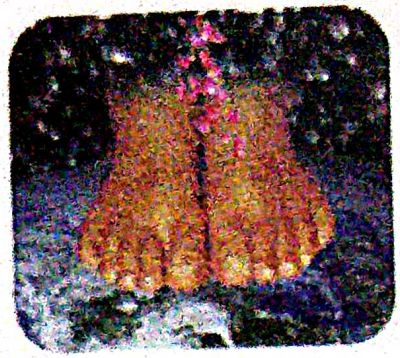

संसार कहे, गुरू पारखी, शिष्य हीरा,
फकीर कहे गुरू सारथी, शिष्य पीड़ा।

कुदरत का है कायदा,
तू है अधूरा–आधा,
पूर्ण होना चाहता है तो,
गुरू में रख ध्यान,
जीवन में मर्यादा,
हर सांस का फिर होगा फायदा।

होनी अटल है, होकर रहती है,
पर तुझे नहीं भाती है,
अनहोनी तो होती नहीं,
तेरे मन में हर बार हो जाती है।

आधा उसका है आधा तेरा है,
वो अपना आधा तुझे दे कर भी पूरा है,
तू उसका आधा लेकर भी अधूरा है,
क्योंकि, वो देकर भी कहते है तेरा है
तू लेकर भी कहता है मेरा है।

जीवन यज्ञ में डाल, अपने सांसो की आहुति,
स्वांस–स्वांस सेवा में रम जा,
हो जा भभूती,
क्योंकि सेवा श्रेष्ठ है 'मारूति'।

कुदरत की मानी, मन की पाई,
मनमानी ने धूल चटाई,
प्रकृति ने सदा की भलाई
तुझको कभी शर्म न आई।

कुदरत का है कुदरत से चले,
रखो ऐसी कामना,
वापसी में जाकर होगा,
मालिक का सामना।

क्रोध से शोध भला,
क्रोध तुझे खा जाता है,
शोध में तू खो जाता है।

अन्धों ने प्रेम किया,
तो अन्धा कह दिया,
आँखों वालों ने किया,
तो धोखा कह दिया,
किसी फकीर ने कहा –
"आँखे बंद हो या खुली,
प्रेम तो वो है जो हो जाता है"।

सुन प्यारे, तू है मालिक का बन्दा,
मन से काम करना, जीवन में चंगा,
ना दुखाना, किसी आत्मा को कभी,
ना करना, कभी किसी की निंदा।

न मन पुजता है, न तन पुजता है,
दोनों का अपना अपना गुण है जो पुजता है।

जो चाहता है उसको बीज दे,
सत्कर्मों से नेकी कमा,
मिल जाएगी तुझे भी,
कर औरों की भूल को क्षमा।

आस्था में हो 'कसक',
संसार होगा बेअसर,
जीवन में होगी महक।

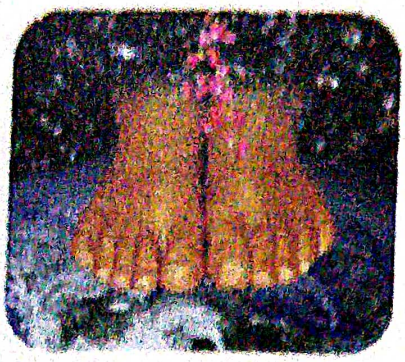

गुरु घट–घट मे बसता है,
दिल फिर भी घटता है,
चरित्र से 'मैं' घटा ले,
साकार हो हर घट मे,
मालिक को पा ले।

''मैं'' हार में 'मेहर'

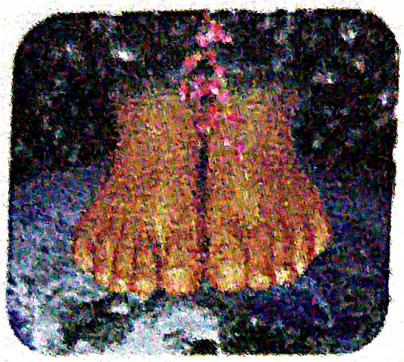

शरणागत को करते हो क्षमा,
अधूरों को पूरा करते हो,
पूरों को सवाया करते हो,
आप हो पूर्ण,
आपका मिलन पूर्णिमा।

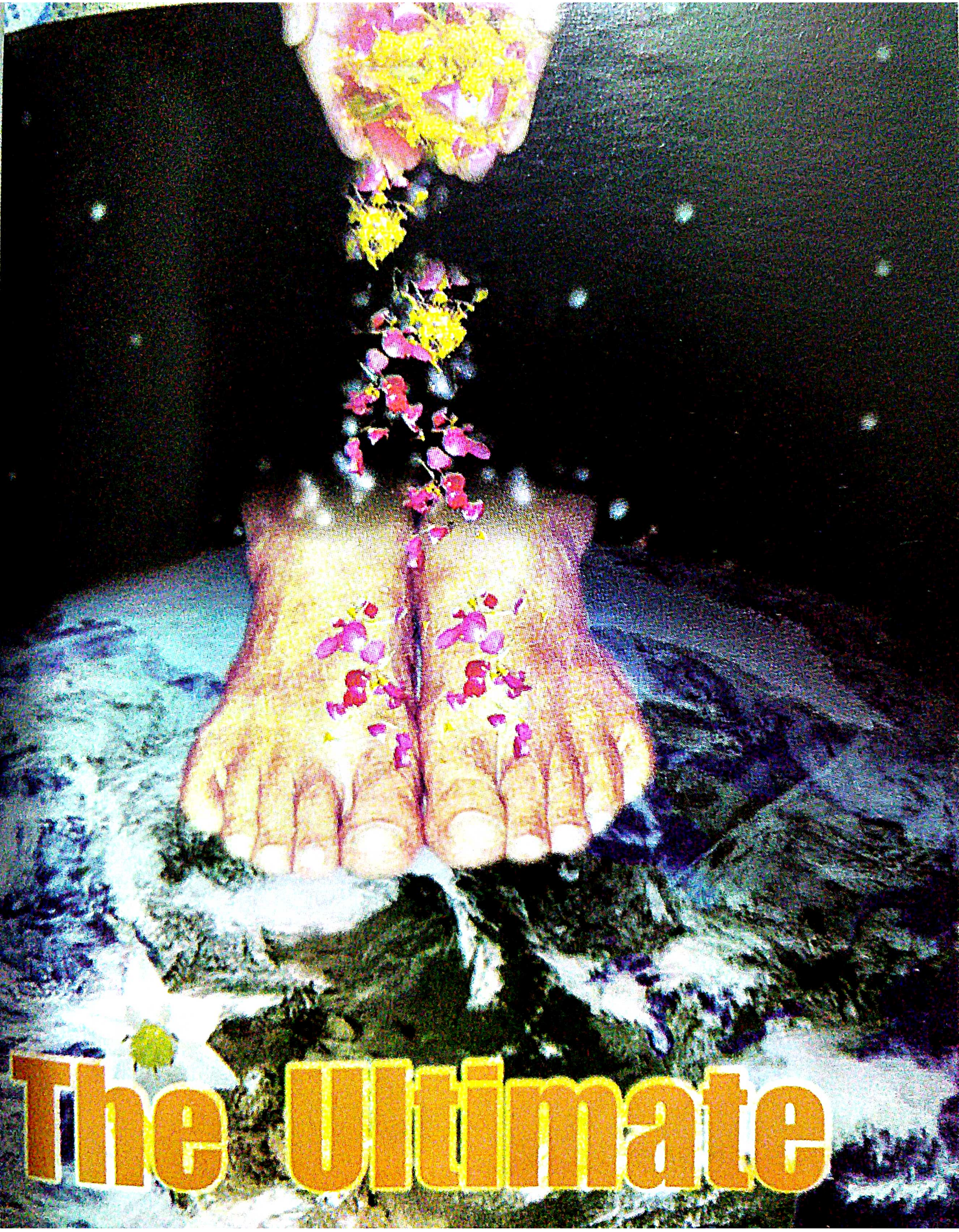
The Ultimate

ध्यान मूलं गुरुर्मूर्ति
मंत्र मूलं गुरुवाक्यम्
पूजा मूलं गुरौपदम्
मोक्ष मूलं गुरौकृपा।